अंग की पांण्डित्य परम्परा

डॉ0 सुचिता त्रिपाठी*

अंग षोडष महाजनपद का सर्वोच्च जनपद के रूप में स्थान संजोया था जिसकी राजधानी चम्पा नगर थी। चम्पा को विभिन्न नामों से पहचान करने की जानकारी साहित्य एवं पुराणों में की गई हैं, इसके भौगोलिक स्वरूप का विस्तार विस्तृत था जिसमें वर्तमान रूप में उड़िसा का कुछ भाग, झारखण्ड, नेपाल की तराई क्षेत्र तक होने की जानकारी पुराणों से प्राप्त होती है।

बिहार के पूर्वी और झारखंड के उत्तरी भाग को मिलाकर यह बड़े भू–भाग में विस्तृत फैला मोरंगा (नेपाल का दक्षिणी भाग) से दुमका–गिरिडीह (झारखंड का उत्तरी भाग) (पूरब में राजमहल की पहाड़ी तथा पश्चिम में लक्खीसराय आदि तक) पौराणिक अंग देश है। षोडष महाजनपद अंग का महत्व एवं समृद्ध राष्ट्र होने की चर्चा भारतीय वांग्मय से प्राप्त होता है। करोड़ों जन मानस वाले इस क्षेत्र की एक अलग भाषा है– अंगिका। अंग जनपद का सबसे पहला साहित्यकार होने का गौरव मंडन मिश्र (महिषी–नवगांव) को जाता है जिन्होंने अनेक संस्कृत वांग्मय की रचना की थी, उसमें एक ग्रंथ 'नैष्यकर्म्यसिद्ध' बहुचर्चित है।

लगभग आठवीं शताब्दी में विक्रमशीला विश्वविद्यालय की स्थापना करने वाला पालशासक धर्मपाल ने इस प्रदेश में शिक्षा को प्रकाशमय करने के लिए विश्वविद्यालय की स्थापना करके सिद्ध किया कि यह क्षेत्र ज्ञानियों का क्षेत्र है ऐसे में शैक्षणिक संस्थान रहना आवश्यक समझा, जहाँ मूर्द्धन्य विद्वानों का समावेश था। अंग में अंगिका कवि सरहपाद ही हिन्दी के भी आदिकवि बने और अंग की भाषा अंगिका ने हिन्दी को खड़ी बोली में खड़ा होने का आधार दिया। यहाँ इस बात का उल्लेख करना उचित होगा कि सरहपाद, शबरपा, धर्मपा, चम्पपा, लुइपा जैसे अधिकांश सिद्ध कवियों की जन्म स्थली अंग ही चिन्हित की गई है और अंग की भाषा को अंगिका कहा गया हे। सरहपाद के लेखन में अंगिका भाषा का प्रयोग किया गया।

लगभग आठवीं शताब्दी में मंडन मिश्र का काल प्रारम्भ होता है, वस्तुतः ये अंगुत्तराप के महिषि बनगांव के प्रख्यात न्याय एवं मीमांसा के क्षेत्र में शास्त्रार्थ हुआ था, मंडन मिश्र की धर्मपत्नी शारदा देवी उभय भारती, सरस्वती की अवतार मानी जाती थी, इनके द्वारा शंकराचार्य को शास्त्रार्थ में परास्त किया गया था। मंडन मिश्र के द्वारा रचित विधि विवेक, भावना विवेक, ब्रह्म सिद्धि, वेदान्त वार्तिक और मंडन त्रिशती आदि प्रसिद्ध है। मंडन मिश्र दर्शन एवं न्याय के उद्भट्ट थे जिनकीं खोज में शंकराचार्य मिथिला पहुँचे थे। मंडन मिश्र के घर की पूछ–ताछ शंकराचार्य ने एक पनिहारन से की थी। उत्तर में पनिहारन ने उन्हें संस्कृत में जवाब दिया जिससे शंकराचार्य प्रभावित हुए। यह भी किवंदन्ती है कि जब शंकराचार्य उभय भारती से परान्त हो गये तब अभय राजा के शरीर में योग बल से प्रवेश कर उन्होंने अमरूकशतक के महाकाव्य की रचना की।

लगभग आठवीं–नवी शताब्दी में अंग जनपद के सबौर (सहौर) में दीपंकर श्री ज्ञान, का जन्म हुआ, जो नालंदा महाविहार से ज्ञान प्राप्त कर विक्रमशिला में प्राचार्य पद पर आसीन हुए। बाद में वे तिब्बत गए और अतीश दीपंकर के नाम से विख्यात हुए।

लगभग सोलहवीं सदी में अंग जनपद के कवि ब्रजभाषा और अवधि के प्रभाव में रचना करने लगे थे। विद्यापति भी उसी भक्तिकाल के साहित्यकारों में से एक थे। उन्होंने मुख्य रूप से संस्कृत में ही रचना की। यद्यपि विद्यापति का जन्म मिथिला में हुआ था, परन्तु उनकी कर्मभूमि अंग प्रदेश ही रही। उन्होंने अनेक संस्कृत–पुस्तकों के अलावा कीर्तिलता एवं कीर्ति पताका, अवहट्ट में तथा पदावली मैथिली नामक क्षेत्रीय भाषा में भी रचना की। उनकी अवहट्ट भाषा अन्य कोई नहीं, अपितु अंगिका का ही प्राचीन स्वरूप है। लगभग इसी काल में अंग जनपद में गाने झाँ का नाम हास्य व्यंग्य कथाकार के रूप में उभरा। घाघ, ने अपने अनुभवों के आधार पर कृषि साहित्य को समृद्ध करने का उपक्रम किया।

अंग की पांडित्य परम्परा में सोलहवीं सदी के बाद से उन्नीसवीं सदी के पूर्वाध तक गतिहीनता का दौर रहा। अंग जनपद उक्तकाल में विदेशी आक्रमणों और संघर्षों से जूझ रहा था। इसी काल में बारहवीं सदी का छूटा हुआ तंत्र–मंत्र का प्रचार–प्रसार पुनः प्रारम्भ भी हो गया। विस्सू–रावत् सहलेश भगत, ज्योति तपस्या, लोरिकायन, हिरनी–बिरनी, इन्दुमाली, वेणीभगत और घुघली घुटमा–जैसे काव्य गाथा की रचनाएँ इसी काल की हैं जिसमें तांत्रिक पद्धति का समागम है। इन लोकगाथाओं ने तंत्र–साधना के साहित्य को प्रारूपित किया है। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में हिन्दी और बांग्ला भाषा के विकास का केन्द्र स्थल अंग क्षेत्र ही रहा। कुछ रचनाकारों ने यहां जन्म लेकर तथा कुछ ने इस क्षेत्र को अपनी कर्म भूमि बनाकर इस जनपद का गौरव बढ़ाया। बाबू हरिश्चन्द्र जिन्हें हिन्दी साहित्य का जनक कहा जाता है, अंग जनपद के राजमहल क्षेत्र में ही पैदा हुए थे। महान साहित्यकार शरत्चन्द्र का जन्म अंगनगरी भागलपुर में हुआ था। ऐसा माना जाता है कि उनकी बहुचर्चित कृति 'देवदास' भागलपुर की धरती पर ही लिखी गई थी।

अंग की महत्ता विशेषकर शिक्षा क्षेत्र में, एक–से–एक विद्वानों का पदार्पण हुआ। उसी कड़ी में महान यायावर महापंडित राहुल सांकृत्यायन का पदार्पण हुआ। जिन्होंने सुल्तानगंज से 'गंगा का पुरातत्व अंक' का सम्पादन करके यह सिद्ध कर दिया गया कि अंग के पुरातत्व का क्या महत्व है, यह इस क्षेत्र के लिए अनूठी कृति है। इस ग्रंथ से पंडित जी ने अंग के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों एवं कला, स्थापत्य कला का अनुसंधानपरक आलेखों का चयन कर सम्पादित किया है।

सन् 1930 से 1940 के बीच में हीरा (काव्य खंड), लवणलीला (नाटक), उत्सर्ग (खंडकाव्य), खादी लहरी एवं पश्चाताप (उपन्यास) आदि रचनाएँ लिखकर बुद्धिनाथ झा 'कैरव' ने हिन्दी के महान साहित्यकारों की श्रेणी में अपने को प्रतिष्ठित

हिन्दी विभाग असिस्टेन्ट प्रो0आर्य महिला पी0जी0 कॉलेज,चेतगंज, वाराणसी।

कर लिया। जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज' प्रेमचन्द के समकालीन साहित्यकारों में थे जिनके दो कविता संग्रह (अनुभूति : 1933, अंतध्वनि 1941) और चार कहानी संग्रह (किसलयः 1929, मलिकाः 1930, मृदुदलः 1932, मधुमयीः 1937), एक आलोचनात्मक पुस्तक ' प्रेमचन्द की उपन्यास कला (1933) तथा एक रेखाचित्र (चरित्र–रेखाः 1943) नाम से कुछ आठ पुस्तकें प्रकाशित हुई। अंग के चम्पानगर वासी हिन्दी के अल्पज्ञात उपन्यासकार कृपानाथ मिश्र का समस्यामूलक उपन्यास 'विमाता' भी उल्लेखनीय है। बीसवीं सदी के प्रथम दशक में जन्मी छायावाद चतुष्टय की चौथी कड़ी महादेवी वर्मा ने अपने बाल्यकाल का कुछ हिस्सा अंगजनपद (भागलपुर) में ही बिताया था। तब उनके पिता गोविन्द स्वरूप वर्मा टी0एन0वी0 कालेजिएट विद्यालय के प्रिसिंपल थे। महादेवी वर्मा ने अन्य साहित्यकारों के साथ भागलपुर स्थित भगवान पुस्तकालय में आयोजित साहित्यिक गोष्ठियों में सम्मिलित होती रहीं।

हिन्दी साहित्य के बहुचर्चित हस्ताक्षर हैं राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर'। अपने समकालीन अंग जनपद के कवि 'द्विज' तथा कथाकार 'रेणु' के साथ साहित्यिक गोष्ठियों में वे सदा अपनी मातृभाषा अंगिका को ही प्रश्रय देते रहे। सन् 1964–65 में जिन दिनों वे भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति थे तब उन्होंने अंग व अंगिका प्रेम को परवान चढ़ाया था। उनकी 'हिमालय' कविता यहीं भागलपुर में रचित हुई थी। राष्ट्रकवि दिनकर ने अपनी रचनाओं के माध्यम से युवकों को संघर्ष के लिए प्रेरित किया। उन्होंने श्रृंगार तथा आध्यात्मिक चेतना दोनों पक्षों को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। दिनकर ने 'संस्कृति के चार अध्याय' नामक पुस्तक में अंग जनपद और चम्पा के गौरवशाली अध्याय को एक नया आयाम दिया और अंग जनपद की महत्ता स्थापित की। उनकी अन्य चर्चित पुस्तकों में उर्वशी, रश्मिरथ, कुरूक्षेत्र, हुंकार प्रमुख हैं।

गोपाल सिंह 'नेपाली' आजीवन अंग की साहित्यिक गतिविधियों से जुड़े रहे। आधुनिक अंगिका आंदोलन की नींव डालने में फणीश्वर नाथ रेणु, पंडित गदाधर अम्बष्ठ, श्री लक्ष्मी नारायण 'सुधांशु', अनूपलाल मंडल, डॉ0 मधुकर गंगाधर जैसे साहित्यकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अम्बष्ठ ने 'मेघदूतम' का अंगिका में अनुवाद किया। अनूपलाल मंडल ने अंगिका में नया सूरजः नया चान (1979) नामक उपन्यास लिखा, और सुधांशु अंग भाषा परिषद, के अध्यक्ष रहे और इस अध्यक्ष पद से उन्होंने अंगिका को बहुत ताकत प्रदान की।

फणीश्वरनाथ रेणु की गिनती अंग जनपद के महान साहित्यकारों में की जाती है। उनकी कालजयी कृति 'मैला आँचल' है। इनकी एक अन्य कृति 'तीसरी कसम मारे गए गुल्फाम' अत्यंत ही चर्चित कृति है। उनके उपन्यासों में प्रयुक्त भाषा के बारे में जब एक बार हिन्दी और पंजाबी के कथाकार जसवंत सिंह 'वदरी' ने पत्र लिखकर पूछा था कि उसमें किस भाषा का प्रयोग हुआ है तब इस पर उन्होंने अंगिका का ही नाम लिया था। यद्यपि वह भाषा मैथिली अंगिका का मिश्रण है।

बलाई चन्द्र मुखोपाध्याय 'बनफूल' की कर्मभूमि अंग प्रदेश ही थी। वनफूल ने अंगिका की वाणी को बंगला साहित्य में समाहित कर उसे एक नया आयाम दिया। उनकी कृतियों में 'हाटे बाजरे' प्रमुख है जिस पर बंग्ला भाषा का सम्मान

पुरस्कार भी उन्हें मिल चुका है। आदमपुर की लाल कोठी एक स्मरणीय एवं ऐतिहासिक स्थल के रूप में प्रसिद्ध हैं।

आचार्य कपिल (मुंगेर), आचार्य शिवबालक राय (भागलपुर), अवध भूषण मिश्र (मुंगेर), महाकवि सुमन मुरो (दुमका) डॉ0 डोमन साहु समीर (मूलतः गोड्डा। देवधर), डॉ0 परमानंद पाण्डेय, नरेश पाण्डेय, डॉ0 तेज नारायण कुशवाहा, डॉ0 विष्णु किशोर झाा, बेचन, डॉ0 रामेश्वर प्रसाद सिंह, डॉ0 तपेश्वर नाथ, उमेश जी, रामचन्द्र चौधरी, राजेन्द्र पंजियार, सुधाकर ने अपनी रचनाओं से अंगिका साहित्य को समृद्ध किया है। तीन दर्जन से अधिक पुस्तकों के लेखक/संपादक डॉ0 अमरेन्द्र हिन्दी–अंगिका के समर्पित साहित्यकार हैं। डॉ0 राधा कृष्ण सहाय (कवि, कहानीकार, नाटककार, भाषा विद, अनुवादक) का नाम उल्लेखनीय है। फिलहाल देवेन्द्र सिंह हिन्दी कहानी में महत्वपूर्ण हस्ताक्षर बनकर उभरे हैं जिनकी हिन्दी में प्रमुख कृतियां हैं।

मिथिलांचल में जन्में श्री बैद्यनाथ मिश्र (बाबा नागार्जुन) का कर्मक्षेत्र अंग की धरती रही। 'बलचनमा', 'बाबा बटेसर नाथ' और 'चम्पा' आदि जैसी कृतियों की रचना कर बाबा नागार्जुन राष्ट्रीय क्षितिज पर प्रखरता से उभर आए। हंस कुमार तिवारी की अंगिका के साथ–साथ हिन्दी में भी कई रचनाएँ थीं। उनकी एक रचना कवीन्द्र रवीन्द्र की गीतांजलि का अनुवाद सर्वाधिक चर्चित कृति है।

अंग के अन्य साहित्यकारों में तारकेश्वर प्रसाद 'दादा' दर्शन दुबे, अवध भूषण मिश्र, श्री कृष्ण प्रसाद चौधरी, शिवनंदन प्रसाद, गौरीशंकर मिश्र द्विजेन्द्र, रामेश्वर झा, दामोदर शास्त्री, सतीनाथ भादुड़ी, छेदीलाल झा, 'सेवक', कवि मधुकर, सुभाष झा भ्रमर, भव प्रीतानंद ओझा, हरिलाल 'कुंज', ब्रह्मदेव झा, राम सेवक चतुर्वेदी, भुवनेश्वर चौधरी, 'भुवनेश', उदयकांत ठाकुर, प्रभात रंजन सरकार, सुरेश मंडल 'कुसुम', रामशंकर मिश्र 'पंकज' के नाम उल्लेखनीय हैं।

अंगुत्तराप के महत्वपूर्ण अंगिका लेखकों और समर्थकों में कुमार विमल का नाम अग्रगण्य है जिन्होंने आधुनिक अंगिका साहित्य की श्रीवृद्धि के लिए श्रेष्ठ अंगिका कथा लेखन की परम्परा को नया जीवन दिया। अंगुत्तराप की इसी परम्परा को आज खगड़िया की नई पीढ़ी के साहित्यकार पूरी निष्ठा के साथ निभा रहे हैं। इनमें कविवर आरसी प्रसाद सिंह, डॉ0 लषण शर्मा, कैलाश झा 'किंकर' के नाम उल्लेखनीय हैं।

संदर्भ ग्रंथ –

1. महेश सिंह महेश, अंग गौरव, 'अंग और अंगिका', भागलपुर, 1980 पृ0 106
2. कनक लाल चौधरी– कनिक', डिस्कवरी ऑफ लास्ट ग्लोरी, दिल्ली, 2004
3. राहुल सांकृत्यायन, पुरातत्व निबंन्धावली, प्रयाग, पृ0 208
4. शंकर दयाल शर्मा, (सं0) बिहार एक सांस्कृतिक वैभव
5. राहुल सांकृत्यायन, वहीं।
6. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', हमारे लोक देवी देवता, मुजफरपुर, 2003, पृ0 16 से आगे।
7. राहुल सांकृत्यायन, वही।
8. चन्द्रप्रकाश जगप्रिय, अंगुत्तराप का सांस्कृतिक इतिहास, खगड़िया, 2003, पृ0 133.